सम्पादकीय नारी सशक्तीकरण -परम वंदनीया माताजी को एक सार्थक श्रद्धांजलि «2

बंदियों के लाभार्थ युग पुरोहित प्रशिक्षण शिविर 3»

कामठी, नागपुर में 108 कुण्डीय यज्ञ का विशाल आयोजन 4»

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई शान्ति एवं सुलह संस्थान की स्थापना 8»

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अप्रैल 2022

वर्ष : 34, अंक : 20

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 अप्रैल 2022

वार्षिक चंदा : ₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

अवाञ्छनीयताओं के दावानल में जलती मानवता को चाहिए

मातृशक्ति का आशीष

महान माताएँ क्रमशः पुतली बाई (महात्मा गाँधी जी की माँ), विद्यावती (अमर शहीद भगतसिंह की माँ) तथा सिंधुताई सपकाल-सैकड़ों अनाथ बच्चों की प्रिय माता

व्यक्ति और समाज को ऊँचा उठाने में अनेक घटकों का योगदान होता है। शिक्षाशास्त्री, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री सुख-सुविधाओं के संवर्द्धन तथा समाज की सुव्यवस्था एवं शालीनता बनाए रखने के लिए हर सम्भव प्रयास करते हैं। भौतिक विकास में इन सबका सहयोग आवश्यक है और महत्त्वपूर्ण भी, पर व्यक्ति एवं समाज में उदारता एवं उदात्तता, शालीनता एवं सदाशयता का बीजारोपण मातृशक्ति द्वारा ही होता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में मातृशक्ति का सर्वोपरि स्थान रहा है। माँ के प्रति अगाध एवं अनन्य श्रद्धा के भाव ने कभी इस देश को महानता के उच्चतम शिखर पर पहुँचाया था। प्रगति और समुन्नति की, सुख और शान्ति की भूतकालीन स्वर्गीय परिस्थितियों के कारणों पर दृष्टिपात करते हैं तो एक ही तथ्य हाथ लगता है-भारतीय जनमानस के अन्तःकरण में विद्यमान माँ के प्रति अगाध श्रद्धाभाव।

माता की महिमा

देवी-देवताओं में माँ को एक सर्वोत्तम सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। अनेक प्रकार की देवियों की प्रतिष्ठापना, पूजा, आराधना के पीछे भी एक ही दर्शन काम करता है-मातृसत्ता के प्रति असीम श्रद्धाभाव का विकास करना। यह जिस भी समाज में जितना अधिक होगा, वह उतना ही शालीन एवं श्रेष्ठ होगा। सर्वांगीण प्रगति के लिए ऋषियों ने मनुष्य को सर्वप्रथम जो शिक्षा दी है वह है-माँ के प्रति अनन्य निष्ठा का विकास करना। शिशु को आरम्भिक शिक्षा देते हुए भारतीय संस्कृति कहती है-"मातृमान् पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद।" अर्थात् माता-पिता और आचार्य ही मनुष्य जीवन को ढालने में सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं। इन तीनों में माँ का स्थान प्रथम और सर्वोपरि है।

नीतिशास्त्र में एक प्रश्न किया गया है-पृथ्वी से भी बड़ा कौन है? उसका उत्तर देते हुए ऋषि कहते हैं, "पृथिव्याः माता गरीयसी" माता पृथ्वी से भी बड़ी है। माँ के त्याग, बलिदान एवं महानता के कारण ही श्रेष्ठता से अभिपूरित, त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करने वाली वस्तुओं को भी माँ के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है।

'पृथ्वी माता' का सम्बोधन यों ही नहीं है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए क्या-क्या नहीं करता है? पृथ्वी के सीने को चीरता है, उसे जर्जर बनाता है। गन्दगी फैलाता है। पर यह पृथ्वी का मातृ हृदय ही है जो वह सब कुछ सहन करती है। वह मनुष्य के कुकृत्यों पर थोड़ा भी ध्यान नहीं देती, उल्टे अपने अनुदानों की वर्षा सदा करती रहती है। उसकी इस उदारता के कारण ही उसे 'माँ' का पद प्रदान किया गया है। पशुओं में गाय को भी 'माँ' का पद दिया गया है। यह उसके अमृत तुल्य अनुदानों के कारण ही है।

विश्व के मूर्धन्य तत्त्वविदों ने इस तथ्य को एकमत से स्वीकार किया है कि न केवल व्यक्ति, वरन् समाज और राष्ट्र का समग्र विकास मातृशक्ति की गरिमा की प्रतिष्ठा द्वारा ही सम्भव है। फारसी के एक कवि ने बड़े मार्मिक ढंग से कहा है- 'जेरें कदमें वाल्दा, फिरदौसे वरी' अर्थात्-माँ के चरणों के नीचे स्वर्ग है। प्रकारान्तर में स्वर्गीय परिस्थितियों के सृजन के मूलभूत रहस्य का उद्घाटन इन पंक्तियों में किया गया है, वह है मातृशक्ति के प्रति असीम श्रद्धा। एक यहूदी कहावत है, "ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं हो सकता, इसलिए माताओं को भेज देता है।" यह मातृश्रद्धा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

नारी जागरण अभियान की प्रणेता
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा
नारी सशक्तीकरण वर्ष

महापुरुषों की जननी

विश्व के रंगमंच के उच्चतम पदों पर पहुँचे और महानता के उच्च शिखर पर जा चढ़े व्यक्तियों के जीवन इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो उपर्युक्त तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है। उनके विकास में सामाजिक परिस्थितियों, शिक्षा एवं साधनों आदि का सीमित योगदान रहा है। माँ के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव ने ही उन्हें सफलता के शिखर तक पहुँचाया है।

राष्ट्रपति आइजन होवर कहा करते थे, "अब तक मैं जो कुछ भी बन सका हूँ वह माँ की स्नेह अभिपूरित प्रेरणा एवं प्रशिक्षण का ही प्रतिफल है।" जॉन कैनेडी ने एक प्रेस इन्टरव्यू में अपने आकर्षक व्यक्तित्व एवं सफलताओं का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा था कि मेरी माँ सिद्धान्तों एवं आदर्शों की दृष्टि से कठोर और संवेदनाओं की दृष्टि से मोम से भी अधिक मुलायम थी। उसके अगाध स्नेह ने ही मुझे वर्तमान स्थिति तक पहुंचाया है। अब्राहम लिंकन जब अमेरिका के राष्ट्रपति बने तो अपनी सफलता के विषय में कहा, "मैं जो कुछ बन पाया हूँ या आगे आशा करता हूँ, उसका सारा श्रेय मेरी माता को है।"

शिवाजी, राणाप्रताप से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारी भगतसिंह, आजाद तक सभी ने माँ के आँचल में बैठकर ही शासन, पराक्रम एवं चरित्रनिष्ठा का पाठ पढ़ा था। उनके जीवन में मातृभूमि के प्रति त्याग-बलिदान का बीजारोपण बचपन में ही हुआ था। जिन दिनों गाँधी जी विलायत अध्ययन के लिए जा रहे थे, उनकी माँ ने उनसे सदाचार और सत्य की प्रतिज्ञा कराई थी, जिसका निर्वाह वे जीवनपर्यन्त करते रहे। गाँधी जी कहा करते थे कि सदाचार एवं सत्यनिष्ठा का जो पाठ हमारी माँ ने पढ़ाया, वह मेरे जीवन का मूल मन्त्र बन गया।

बाल्यकाल में विनोवा के साथ एक माता-पिता विहीन बालक रहता था। वे प्रतिदिन उस अनाथ बच्चे को रोटियों में घी चुपड़कर देती थीं, जबकि विनोवा को सामान्य रोटियाँ ही मिलती थीं। एक दिन विनोवा ने इस पक्षपात का कारण पूछा। माँ ने भावविह्वल होकर कहा, "इस बच्चे के माता-पिता नहीं हैं। उसे अतिरिक्त स्नेह की आवश्यकता है। तुम्हारी माँ होने के कारण यह तुम्हें सहज ही उपलब्ध है।" माँ के विशाल हृदय में उमड़ने वाली स्नेह की पवित्र धारा ने उदारता का, महानता का जो पाठ उन्हें पढाया उसने विनोवा की जीवन-धारा मोड़ दी।

माता के प्रति श्रद्धाभाव बढ़े

माँ की छत्रछाया में बैठकर पढ़ा हुआ आत्मीयता का पाठ जीवन लक्ष्य प्राप्ति का प्रेरणा स्रोत बनता है। जिस आत्मीयता, करुणा एवं दयाभाव के विकास के लिए कठोर साधनाएँ की जाती हैं, वह मातृ हृदय में सहज ही उपलब्ध होती हैं। आत्मीयता का पढ़ा हुआ पाठ आत्मविकास, आत्मविस्तार का साधन बनता है। "मातृवत् परदारेषु, आत्मवत् सर्वभूतेषु" की भावना का विकास आध्यात्मिक प्रगति का चिह्न माना गया है, वह माँ के प्रति अनन्य श्रद्धा से सहज ही प्राप्त होता है।

अवांछनीयता के दावानल में जल रही मानव जाति को भारतीय संस्कृति की उन विशेषताओं का अवलम्बन लेना होगा, जिसको अपनाकर वह श्रेष्ठ और शालीन बनती थी, महानता का पथ अपनाती थी। मातृशक्ति के प्रति उदात्त श्रद्धाभाव ने भूतकाल में इस देश को प्रगति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाया था। कालान्तर में इसमें कमी हुई, श्रद्धा में ह्रास हुआ। मध्यकाल के काले युग ने तो सदियों से चली आ रही गरिमामय श्रद्धा को बुरी तरह रौंदा, उसे कलुषित किया। मातृशक्ति को कामिनी के रूप में प्रतिष्ठापित कर समूचे नैतिक आधारों को डगमगा दिया।

इन दिनों आयी अनैतिकता की बाढ़ का एक प्रधान कारण है-मातृशक्ति की अवमानना। प्रतिक्रिया सामने है, माँ के हृदय से मिलने वाले उदात्त अनुदानों से वंचित बने रहने के कारण जो उपहार महामानवों के रूप में मिलता था, बन्द हो गया। समाज को श्रेष्ठ एवं शालीन बनाने के लिए पुनः मातृशक्ति को गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित करना होगा। उसके प्रति असीम श्रद्धा का भाव विकसित करना होगा। समाज में श्रेष्ठता एवं शालीनता के संस्कारों का बीजारोपण इसी प्रकार सम्भव होगा। सर्वांगीण सामाजिक प्रगति का आधार मातृशक्ति के प्रति अगाध श्रद्धाभाव को विकसित करने से ही सम्भव होगा।

वाङ्मय खण्ड-62, इक्कीसवीं सदी-नरी सदी, पृष्ठ 2.22-2.25 से संकलित, सम्पादित

माँ की सीख ने राष्ट्रपति पद तक पहुँचाया

अमेरिका के अठारवें राष्ट्रपति यूलिसेस सिम्पसन ग्राण्ट के जीवन की एक मार्मिक घटना है। एक बार वे परिवार के सदस्यों सहित गिरजाघर में सामूहिक प्रार्थना में शामिल थे। ग्राण्ट का छोटा पुत्र शोर मचाने लगा। इससे ग्राण्ट साहब का ध्यान भंग हो गया। उन्होंने बच्चे को चुप रहने का संकेत दिया, पर उसकी उछल-कूद जारी रही। क्रोधित होकर ग्राण्ट ने बच्चे को दो-तीन थप्पड़ जड़ दिए।

ग्राण्ट की वयोवृद्ध माता उठी और बच्चे को सहलाते हुए हृदय से लगा लिया और उसे चुप कराया। बालक के चुप होते ही ग्राण्ट की ओर मुड़ी और तीन-चार थप्पड़ लगा दिये। उपस्थित लोगों में खलबली मच गई। तभी ग्राण्ट अपनी माँ के चरणों में बैठते हुए बोले, ''माँ मेरा ऐसा कौन-सा गम्भीर अपराध था, जिसका दण्ड तुमने मुझे दिया?''

माँ का हृदय भर आया। उन्होंने बेटे को सीने में लगाते हुए कहा, ''जिस अपराध के कारण तुमने बच्चे को दण्ड दिया है, वही तुम्हारे द्वारा भी किया गया है। बच्चा तो शोर मचा रहा था पर तेरा ध्यान कहाँ था। तुम्हारा मन तो स्वयं चंचल था। ऐसी प्रार्थना से क्या लाभ?''

ग्राण्ट ने अपनी त्रुटि स्वीकार की और भावविभोर होकर बोले, ''सचमुच माँ तेरे कारण ही हम राष्ट्रपति पद तक पहुँच सके हैं।''

नारी सशक्तीकरण-परम वंदनीया माताजी को एक सार्थक श्रद्धाञ्जलि

आवश्यकता नारी को उसकी गरिमा का बोध कराने व समर्थ-सहयोगी बनाने की है

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ माता-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः।

देवताओं की स्तुति के लिए अपनाए जाने वाले ऐसे अनेक सूत्र भारतीय संस्कृति में नारी की गौरव-गरिमा का परिचय देते हैं। गौरीशंकर, सीताराम, राधेश्याम जैसे सम्बोधन बताते हैं कि हमारे समाज में पुरुषों से भी अधिक सम्मान नारी का है। नारी को यह प्रधानता किसी पक्षपात या भावावेश में नहीं दी गई, बल्कि उसके दैवीय गुण, व्यक्ति, परिवार व समाज निर्माण में उसकी अग्रणी भूमिका के कारण है।

समाज में पुरुषों के बल, वीर्य, पुरुषार्थ से कहीं अधिक आवश्यकता नारी के सहज गुण-करुणा, वात्सल्य, श्रद्धा, संवेदना, उदारता, सेवा, शालीनता, परमार्थपरायणता की होती है। वैसे तो नारी और पुरुष दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों के संयोग से ही जीवन में पूर्णता प्राप्त होती है, लेकिन पुरुषों का पुरुषार्थ नारी-संवेदनाओं, उत्कृष्ट भावनाओं से युक्त हो, तभी तक वह समाज के लिए हितकारी होता है। भाव-संवेदनाओं के सूखते ही उच्छृंखलता, अराजकता, अत्याचार बढ़ते जाते हैं। वर्तमान युग में वीभत्स होती जा रही परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाय तो निष्कर्ष यही निकलता है कि इन दिनों नारी का वह सम्मान नहीं रहा, जो कभी सनातन काल में हुआ करता था। विदेशी आक्रांतों के प्रभाव से नारी दबी, सहमी, कुचली, शोषित, वंचित होती चली गई। परिणाम यह हुआ कि जीवन में स्वार्थ, संकीर्णता, अहंकार, आवेश बढ़ता चला गया। परिवार टूटते जा रहे हैं, समाज त्रस्त है। साधनों का अंबार है पर सुख, शान्ति, संतोष नदारद हैं। कलह, वैमनस्य, अशान्ति, अत्याचार बढ़ता ही जा रहा है।

नारी सशक्तीकरण की आवश्यकता

नर और नारी एक जीवन-रथ के दो पहिये हैं। रथ अपना कार्य सही ढंग से करे, इसके लिए आवश्यक है कि दोनों पहिये सुदृढ़ हों, दोनों की गति एक ही दिशा में हो, दोनों के बीच सामंजस्य और सहयोग हो। आज समाज के पतन का बड़ा कारण नारी का पिछड़ापन भी है। कमी नारी और पुरुष दोनों ही ओर से है। परम पूज्य गुरुदेव ने 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' का उद्घोष किया है। स्पष्ट है कि जब नारी का वह गौरवशाली स्वरूप पुनः प्रतिष्ठित होगा, तभी सतयुग की वापसी संभव है। इसके लिए नारी और पुरुष दोनों को अपनी-अपनी कमियों को दूर करते हुए परस्पर एक-दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ना होगा।

नारी सशक्तीकरण का अर्थ है नारी वर्ग को यह अनुभव कराना, विश्वास दिलाना कि नारी अबला नहीं है, वह अपने को अबला मान बैठी है। उसकी प्रगति में आ रहे अवरोधों को दूर किया जाना है। आधुनिकता के प्रभाव से समाज में आ रहे भटकावों को दूर कर बहिनों को सही मार्ग दिखाना भी हमारे नारी सशक्तीकरण अभियान का लक्ष्य है।

भौतिक जगत की ओर देखें तो इस युग में नारी हर क्षेत्र में निरन्तर प्रगति कर रही है। उसने अंतरिक्ष तक में अपना झंडा गाड़ दिया है। वह शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में नित नई ऊँचाइयाँ छू रही है। राफेल विमान उड़ाने, सेना की कमान सँभालने जैसे पुरुषोचित दायित्वों को भी वह बड़ी कुशलता से निभा रही है।

यह तो नारी का गौरवशाली पक्ष है। लेकिन चिन्ता उसके दूसरे पक्ष की है। आजादी के 75 वर्ष बाद भी हमारा देश गुलामी के दिनों में विकसित हुई हेय मानसिकता से उबर नहीं पाया है। अविवेकपूर्ण सोच-विचार आज भी हावी हैं। चाहे बहू कलेक्टर, प्रिंसिपल या कोई बड़ी अधिकारी बन गई हो, चाहे वह सामाजिक जीवन में कितने भी बड़े-बड़े फैसले ले रही हो, घर वालों की मानसिकता यही रहती है कि वह अपने कुल-खानदान में चली आ रही परम्पराओं का ही पालन करती रहे। अधिकांश घरों में सास और ननद अपने से कहीं ज्यादा पढ़ी-लिखी बहू की समझदारी को स्वीकारने में ओछापन अनुभव करती हैं। उसकी श्रेष्ठता को प्रोत्साहन देने में उन्हें संकोच होता है।

बेटा-बेटी में भेद की मानसिकता कहाँ मिटी है? इस भेदभाव ने कन्याभ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराधों को जन्म दिया। अब कन्याभ्रूण हत्या पर अंकुश लगा है, लेकिन कानूनी विवशताओं के कारण। आवश्यकता है कि बेटी के जन्म पर भी वैसी ही खुशी हो जैसी कि बेटे के जन्म पर होती है।

नारी! तुम अबला नहीं हो

परिवार, समाज और राष्ट्र की धुरी है नारी। उसमें एक माँ के रूप में अपनी ममता, बहिन के रूप में स्नेह और अर्धांगिनी के रूप में प्रेम के अनुपान के संग शिक्षा और संस्कार देकर परिवारी जनों के व्यक्तित्व को मनचाहा आकार देने की क्षमता विद्यमान है। मदालसा की तरह वह चाहे तो अपने बच्चे को ऋषि बना सकती है और राजा भी। शिवाजी जैसे वीर अनायास ही जन्म नहीं लेते, उन्हें जन्म देती हैं जीजाबाई जैसी माताएँ। लव-कुश को पिता का प्यार नहीं मिला तो क्या, वीर प्रसूता माता सीता रूपी साँचे में ढ़लकर वे इतने बलवान हो गए कि लक्ष्मण और हनुमान जैसे बलशालियों के भी दाँत खट्टे कर दिये।

इसे लगभग एक हजार वर्ष की गुलामी की मानसिकता का प्रभाव कहें या समय की विडम्बना, इतनी सामर्थ्यवान नारी आज भी अपने को अबला मानती है। आज भी वह विवेक की आँख मूँदकर पुरुषों के बेतुके फरमानों का पालन करने में अपनी शान समझती और स्वयं को परदे में ही रखना पसंद करती है। अपनी अकूत क्षमताओं को विकसित कर समाज के नवनिर्माण में योगदान करने की अपेक्षा स्वयं को चूल्हे-चौके तक ही सीमित रखने में संतुष्ट नजर आती है।

नारी सशक्तीकरण वर्ष

इन दिनों गायत्री परिवार की सक्रियता की धुरी परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 है। वे नारी जागरण अभियान की प्रणेता रही हैं। इसे देखते हुए अगले दिनों की गतिविधियाँ 'नारी सशक्तीकरण अभियान' पर केन्द्रित होंगी। यह आलेख उसी दृष्टि से प्रस्तुत है। अगले अंकों में भी इस विषय पर प्रेरणा और मार्गदर्शन क्रम चलता रहेगा।

बहिनों की आत्महीनता वाली मानसिकता का ही परिणाम है कि वह चुपचाप पुरुष वर्ग के निरर्थक जुल्म सहती रहती है। पति शराब की लत में घर फूँकता और बच्चों का भविष्य चौपट करता रहता है और पत्नी-बच्चे दबे-सहमे अशिक्षा, गरीबी का दंश झेलते रहते हैं। यदि नारी अपनी सामर्थ्य को पहचान सके और संगठित होकर ऐसी जुल्म-ज्यादती के विरुद्ध खड़ी हो जाए तो समाज का कायाकल्प ही हो जाए।

आधुनिकता का अभिशाप

आवश्यकता नारी के हेय दृष्टिकोण को दूर कर उसके विवेक, शौर्य, साहस को जगाने की है, लेकिन उससे भी बड़ी आवश्यकता आधुनिकता के प्रभाव से नारी वर्ग को भटकावों से बचाने की भी है। निःसंदेह आज नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है यह प्रशंसनीय है, लेकिन नारी अपनी प्रकृतिप्रदत्त विशेषताओं और गुणों को दरकिनार कर पुरुषों से बराबरी की होड़ करने लगे तो यह दुर्भाग्यजनित दुर्घटना ही होगी। नारी आगे बढ़े, लेकिन जिस दिशा में भी बढ़े अपनी शालीनता, संवेदना, उदारता, परमार्थपरायणता, सेवाभावना जैसे मौलिक गुणों के साथ बढ़े, तभी समाज का कल्याण संभव है। इन गुणों के आधार पर ही वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मूल भावना के साथ युग निर्माण के वाञ्छित अभियान को गति दे सकती हैं। दिल में परपीड़ा की अनुभूति हो, मानवीय संवेदनाएँ हों तो अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगना स्वाभाविक है।

सौन्दर्य और शृंगार नारी के सहज गुण हैं। लेकिन सज्जा और शृंगार में शालीनता तथा मर्यादाओं का ध्यान रखा ही जाना चाहिए। गुण, कर्म, स्वभाव में निरंतर निखार होता रहे, यही सर्वोत्तम शृंगार है। आधुनिकता की होड़ में नारी इस तथ्य को भूलती जा रही है और समाज में तरह-तरह के विग्रह खड़े कर रही है। नारी का फैशनपरस्ती, अश्लीलता, विलास, वासना की ओर बढ़ना और बढ़ावा देना चिंता की बात है। नारी सशक्तीकरण का एक बहुत बड़ा ध्येय इस भ्रम और भटकाव से बहिनों को बचाकर उन्हें शालीनता और सृजनात्मकता की ओर प्रेरित करना है।

सशक्तीकरण की दिशा-धारा

गायत्री उपासना-साधना : गायत्री उपासना-साधना आत्मशक्तियों का बोध कराने में अत्यंत सहायक होती है। देखा जाता है कि गायत्री उपासक बहिनों की स्वयं की मानसिकता तो बदलती ही है, उनके घर-परिवार का वातावरण भी क्रमशः बदलता जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण हर क्षेत्र में मिल जायेंगे जिसमें बहिनों के पति और परिवारी जन पहले आधे-अधूरे मन से ही उन्हें मिशन के कामों के लिए थोड़ी-बहुत अनुमति देते थे, गायत्री उपासना के प्रभाव से उनके घर वालों की मनःस्थिति और परिस्थितियाँ बदलती गयीं। ऐसे अनेक लोग आगे चलकर गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता बन गए।

सम्मान : बहिनों को घर-परिवार में बराबरी का प्यार और सम्मान मिले। घर की परम्पराओं और दैनंदिन के कामकाज में उन्हें वह आदर दिया जाय, जिससे उनकी आत्महीनता की मानसिकता दूर हो व आत्मगौरव की अनुभूति हो। पुरुष वर्ग की तरह ही बहिन, बेटी और बहू को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाए।

देखा जाता है कि पुरुषों की बजाय नारी ही नारी की अधिक दुश्मन होती है। बहू को सास-ननद की प्रताड़ना परेशान करती है तो अधिकांश बहुएँ भी अपनी सास-ननद को सगी माँ और बहिन जैसा सम्मान कहाँ देती हैं! दोनों ओर की मानसिकता को बदलने के लिए भी सतत प्रेरणा और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

शिक्षा-संस्कार : अज्ञानता सबसे बड़ा अभिशाप है। नारी सशक्तीकरण के लिए साक्षरता ही पर्याप्त नहीं, बहिनों के कौशल को भी निरन्तर बढ़ाते रहने की आवश्यकता है। शिक्षित-संस्कारवान नारियाँ घर, परिवार और समाज को मनचाहा आकार दे सकती हैं, लेकिन इसके लिए आवश्यक सोच एवं कौशल विकसित करने में पुरुष वर्ग की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

आज समाज में भय, अन्याय, अत्याचार का वातावरण है। बहिनें अपने आप को सुरक्षित अनुभव नहीं करतीं। ऐसी परिस्थितियों में बेटियों और बहिनों को साहसी एवं बलवान बनाने के प्रयास भी किए जाने चाहिए।

गायत्री परिवार के यज्ञ-संस्कार अभियान ने इस दिशा में बहुत बड़ा योगदान दिया है। अब तो कन्या कौशल शिविर, किशोर कौशल शिविर, दम्पति शिविर, नारी जागरण सम्मेलनों का प्रचलन चल पड़ा है जो बहुत लोकप्रिय हो रहा है। परिवारों में भी इस तरह के प्रयास गतिशील हों तो परिणाम बहुत बेहतर और उत्साहवर्धक हो सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव की दृष्टि में

परम पूज्य गुरुदेव जबलपुर आए थे। मैंने उनसे पूछा, "आचार्य जी! आप नारी जागरण और नारी सशक्तीकरण की बात करते हैं, वह बहुत अच्छी बात है, लेकिन आपने विवाह के कर्मकाण्ड में कन्यादान को क्यों शामिल किया है? क्या कन्या कोई दान की वस्तु है?"

मैंने अपने मन की और भी बहुत-सी बातें कहीं। गुरुदेव बड़ी गंभीरता से सुनते रहे। जब मेरी बात पूरी हुई तब उन्होंने कहा, "बेटी! तुम नारी स्वातंत्र्य की बात कर रही हो। मेरा आन्दोलन उस नारी के लिए है जो निर्मात्री भी है और धात्री भी है।"

इस एक ही वाक्य ने नारी सशक्तीकरण सम्बन्धी मेरी सारी भ्रान्तियों का निवारण कर मेरी सक्रियता को सही दिशा प्रदान कर दी।

जबलपुर पहुँचे शान्तिकुञ्ज के एक वरिष्ठ प्रतिनिधि को एक संभ्रान्त महिला द्वारा सुनाया गया संस्मरण।

स्वावलम्बन : देखा जाता है कि जो बहिनें आर्थिक दृष्टि से समर्थ और स्वावलम्बी नहीं हैं, वे पारिवारिक एवं सामाजिक हिंसा एवं प्रताड़ना का अधिक शिकार होती हैं। आर्थिक दृष्टि से अपने पैरों पर खड़ी नारी स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने में समर्थ होती है। जो जरूरतमंद बहिनें हैं उन्हें तो स्वावलम्बी बनाया ही जाए, साथ ही हर नारी में इतना कौशल तो हो ही कि वह आवश्यकता पड़ने पर स्वयं अर्थोपार्जन कर सके। घर में रहकर निरर्थक समय गँवा देने वाली नारियाँ यदि समाज सेवा या अर्थोपार्जन में अपना समय बिताने लगें तो स्वयं तो समर्थ बनेंगी ही, राष्ट्र भी सशक्त बनेगा।

खाली दिमाग शैतान का घर माना जाता है। फुर्सत के समय में आलस्य, निंदा, चुगली जैसी अनेक आदतें पलती रहती हैं। यदि यह समय सेवा, अर्थोपार्जन, शिक्षा या गुणग्राहकता में व्यतीत हो तो क्लेश, अशांति, विग्रह, मनमुटाव जैसी अनेक अवांछनीयताओं से मुक्ति मिल सकती है। 'व्यस्त रहो, मस्त रहो' का सिद्धांत शारीरिक-मानसिक रूप से व्यक्ति को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।

व्यक्तिगत जीवन में संतुलन

आवश्यकता केवल नारियों के सशक्तीकरण की ही नहीं है, जीवन में नारी प्रधान गुणों के अभिवर्धन की भी है। हर पुरुष में श्रद्धा, संवेदना, वात्सल्य के रूप में एक नारी और हर नारी में साहस, शौर्य के रूप में एक पुरुष विद्यमान है। आज पुरुष समाज में नारी प्रधान गुणों की कमी होती जा रही है, इसीलिए संवेदनहीनता बढ़ रही है। आतंक, अत्याचार, भ्रष्टाचार, क्रूरता जैसी बुराइयाँ इसीलिए बढ़ती जा रही हैं। इन अवांछनीयताओं को दूर करने के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए। जीवन में संतुलन स्थापित होगा तो परस्पर सहकार-सामंजस्य भी बढ़ेगा।

प्रस्तुत नवरात्र में करोड़ों श्रद्धालुओं ने मातृशक्ति की उपासना की है। वे घर में माँ, बहिन, बेटी और धर्मपत्नी के रूप में विद्यमान 'देवी' को भी पहचान सकें और उसके सशक्तीकरण के लिए प्रयास करें, शक्ति लगाएँ तो समाज को बदलते देर नहीं लगेगी।

मानवता के कल्याण के लिए युगशिल्पियों की निःस्वार्थ सेवाएँ

नारी स्वावलम्बन के प्रशंसनीय प्रयास

नौ वर्षों में 1500 बहिनों को सिलाई का प्रशिक्षण दिया

अलवर की एक कक्षा में सिलाई सीखती बहिन-बेटियाँ

अलवर। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार अलवर अपने स्वावलंबन आन्दोलन के अंतर्गत 15 मार्च 2013 से ही जिले की समाज की गरीब तथा स्वावलंबी बनने की इच्छुक महिलाओं को निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण दे रहा है। इस हेतु तीन-तीन माह के निःशुल्क शिविर आयोजित किए जाते हैं, जिसमें सिलाई मशीन, कैंची आदि आवश्यक सामान गायत्री परिवार अलवर ही उपलब्ध कराता है।

यह स्वावलम्बन अभियान पूरे जिले में चल रहा है। गायत्री शक्तिपीठ करोली कुण्ड अलवर पर तो 15 मार्च 2013 से लगातार 3-3 माह के शिविर चल रहे हैं। इसके अलावा अलवर शहर में नेहरू नगर, अम्बेडकर नगर, तूलेडा रोड, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, जनता कॉलोनी, मुंगस्का सहित प्रज्ञा पीठ बानसुर, गायत्री चेतना केन्द्र टपूकडा, खोकर में भी अनेक सिलाई शिविर आयोजित किये गए हैं। अब तक चालीस से अधिक प्रशिक्षण शिविर लगाए जा चुके हैं, जिनमें लगभग 1500 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया है।

श्री सतीश सारस्वत ने बताया कि इन शिविरों में भाग ले रही बहिनों को साप्ताहिक यज्ञ में सम्मिलित किया जाता है। उन्हें जीवन में सहयोग और सहकार का महत्त्व बताया जाता है, बच्चों को सद्गुणी-संस्कारवान बनाने के सूत्र दिए जाते हैं।

वनवासी कल्याणार्थ अनेक योजनाएँ

आष्टा, सीहोर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ आष्टा ने विगत वसंत पर्व से प्रतिदिन लगभग 100 मरीजों को निःशुल्क भोजन प्रदान करने की सेवाएँ आरम्भ की हैं। उल्लेखनीय है कि यह वनवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ गायत्री परिवार आष्टा ने वनवासी उत्थान के लिए पहले से कई कार्यक्रम चला रखे हैं। श्री भोपालसिंह परमार, उदयसिंह, शैलेन्द्र वर्मा एवं महिला मण्डल आष्टा इन विशिष्ट सेवाओं के माध्यम से अपनी युग निर्माणी आस्थाओं का शानदार परिचय दे रहे हैं।

- **मरीजों को निःशुल्क भोजन**
- **500 घरों में देवस्थापना**
- **यज्ञ-दीपयज्ञों में व्यसन-मांसाहार छोड़ने की प्रेरणाएँ**

गायत्री शक्तिपीठ आष्टा ने प्रत्येक रविवार को 24 नए घरों में देवस्थापना एवं गंगाजल स्थापना का क्रम चला रखा है, जो अबाध गति से चल रहा है। इस क्रम में अब तक लगभग 500 घरों में गंगाजल और देवस्थापनाएँ हो चुकी हैं।

विगत 6 वर्षों से प्रत्येक शिवरात्रि पर वनवासी समाज के लोगों के हितार्थ पंच कुण्डीय यज्ञ होता है। प्रत्येक अमावस्या एवं पूर्णिमा के दिन अलग-अलग मोहल्लों में दीपयज्ञ होते हैं। इन कार्यक्रमों के प्रभाव से गायत्री परिवार के प्रयासों से हजारों लोग व्यसन-मांसाहार को त्यागकर गायत्री उपासना-साधना करने लगे हैं। वे लोग अब गायत्री परिवार की आदर्श संस्कार परम्परा से अपने बच्चों के विवाह कराने लगे हैं। मृत्युभोज तथा विवाहों में पशुबलि एवं शराब परोसने की प्रथाएँ बन्द होती जा रही हैं।

बंदियों के लाभार्थ युग पुरोहित प्रशिक्षण

50 बंदियों ने दक्षता हासिल की

भोपाल। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ भोपाल एवं केंद्रीय कारागार के संयुक्त तत्त्वावधान में 1 मार्च 2022 से एक मासीय युग पुरोहित प्रशिक्षण सत्र आरंभ हुआ। गायत्री परिवार के 8 प्रशिक्षकों ने प्रतिदिन दोपहर 1 से 4 बजे तक उनकी कर्मकांड, सुगम संगीत और बौद्धिक कक्षाएँ लीं। अंतिम कालखंड शंका समाधान का रखा गया था। प्रशिक्षणार्थियों के साप्ताहिक टेस्ट भी हुए। कई भाइयों ने कर्मकाण्ड कंठस्थ कर लिया था। बौद्धिक कौशल के साथ बंदियों ने इस प्रशिक्षण शिविर को अत्यंत उत्साहवर्धक, मन को शान्ति एवं आनन्द देने वाला बताया।

इस सत्र के लिए 50 बंदियों का चयन किया गया था। यह चयन कारा अधीक्षक श्री दिनेश नरगावे एवं उप कारा अधीक्षक श्री प्रियदर्शन श्रीवास्तव ने स्वयं किया था। कारागार से शीघ्र रिहा होकर यह बन्दीगण अर्जित कौशल का सदुपयोग कर सकें, चयन में इस तथ्य को प्राथमिकता दी गई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सदानंद आंबेकर ने प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गायत्री उपासना एवं सत्साहित्य के स्वाध्याय से आपका व्यक्तित्व सद्गुण सम्पन्न हो, चिन्तन में सकारात्मकता बढ़े, आप स्वावलम्बी बनें, ऐसे प्रयास गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे हैं। श्री रमेश नागर इस सत्र के संयोजक थे।

संगीत प्रशिक्षण लेते बंदीगण और गायत्री परिवार द्वारा अधिकारियों का अभिनंदन

आरम्भ हो गया वृक्ष बचाओ अभियान

राजिम, गरियाबन्द। छ.गढ़

राजिम नगर में गायत्री परिवार के ऊजार्वान कार्यकर्त्ताओं ने 20 मार्च से नगर के मोरहा तालाब के आसपास लगाए गए 40 पौधों को संरक्षित करने के लिए उन्हें व्यवस्थित कर पानी देने का कार्य आरंभ कर दिया। ये पौधे गतवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस, गायत्री जयंती, गुरुपूर्णिमा, रक्षाबंधन एवं जन्मदिवस जैसे पावन अवसरों पर रोपे गए थे। टीकम राम साहू, समन्वयक, पवन गुप्ता, रामकुमार साहू, डॉ संतराम साहू आदि उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने इस कार्य में भाग लेते हुए कहा कि यदि इन वृक्षों की सुरक्षा एवं पानी की व्यवस्था इस गर्मी में नहीं की गई तो गतवर्ष की सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।

तरुमित्र समूह करें पौधों की रक्षा

राजिम के कार्यकर्त्ताओं ने पेड़ों की सिंचाई-सुरक्षा का कार्य आरंभ करते हुए पूरे गरियाबन्द जिले के कार्यकर्त्ताओं को 'तरुमित्र समूह' बनाकर गत वर्ष हर गाँव में लगाए गए 5-5 पौधों को संरक्षित करने का संदेश भी दिया।

सतत वृक्षारोपण का 42वाँ सप्ताह

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद द्वारा वृक्षारोपण अभियान के लगातार 42वें रविवार के दिन मखदुमपुर प्रखंड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सागरपुर में बृहद पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर सागरपुर में हो रहे चौबीस कुण्डीय यज्ञ समिति के संयोजक देवेन्द्र कुमार ने कहा कि गायत्री परिवार के द्वारा किया जा रहा वृक्षारोपण अभियान पर्यावरण को सुरक्षित रखने में मील का पत्थर साबित होगा। उपस्थित युवाओं ने इस अभियान को जीवन भर चलाते रहने का उत्साह दर्शाया।

जहानाबाद के युवाओं में पर्यावरण संरक्षण के लिए बढ़ते उत्साह की झाँकी

होली पर नशा-अश्लीलता, अस्वच्छता निवारण रैली

गैंसड़ी, बलरामपुर। उत्तर प्रदेश

युवा प्रकोष्ठ गैंसड़ी, बलरामपुर ने होलिका दहन से पूर्व जनजागरूकता रैली निकाली, जिसने गैंसड़ी नगर का भ्रमण करते हुए जयकारे, स्लोगन, आदि से नशा, अश्लीलता, अस्वच्छता विरोधी संदेश दिया। होलिका दहन स्थल पर प्रमुख लोगों ने नशा और अश्लीलता से होली पर्व को दूर रखने का संदेश दिया।

इको फ्रेंडली वैदिक होलिका दहन

पर्यावरण संरक्षण और गोधन के सदुपयोग के प्रशंसनीय प्रयास

लखीमपुर खीरी में कण्डों की होली जलाते नवयुवक

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

वर्तमान समय में वृक्षारोपण की अपेक्षा पेड़ों के कटान का अनुपात काफी अधिक है। गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी द्वारा इसे ध्यान में रखते हुए वन्य संपदा संरक्षण के प्रयासों के अन्तर्गत होलिका में काष्ठ (लकड़ी) के स्थान पर सात्विक गुणों से युक्त गोमय उपलों (कण्डों) का उपयोग का अभियान आरम्भ किया गया है। इसे 'इको-फ्रेंडली होलिका दहन' के रूप में भी प्रचलित किया जा रहा है।

प्रगतिशील सोच

लखीमपुर खीरी के साथ गुजरात के वडोदरा नगर में भी हुए ऐसे अनेक आयोजन

इस वर्ष वैदिक होलिका दहन कार्यक्रम में बरखेरवा, सुंदरपुरम, श्रीरामनगर कॉलोनी, पटेल नगर, आवास विकास कॉलोनी सहित नगर के विभिन्न क्षेत्रों से लोगों ने वासंतिक नवसस्येष्टि यज्ञ (वैदिक होलिका दहन) में भाग लिया और हवन सामग्री से आहुतियाँ देकर सभी के कल्याण की प्रार्थना की। इस प्रगतिशील प्रयोग से प्रेरित लोगों ने आगामी होली में ऐसा ही प्रयोग नगर के कई मोहल्लों में करने की चर्चा की। इस दौरान युवा प्रकोष्ठ के शैलेश बरनवाल, प्रिंस रंजन बरनवाल, शुभम गुप्ता, मयंक श्रीवास्तव, नीलमणि बरनवाल (नीलू), निशांत, संदीप अग्रवाल, पंकज तपाड़िया महिला मंडल की राजकुमारी श्रीवास्तव, संगीता कुमारी, रचना अग्रवाल, अनुराधा मौर्य आदि सक्रिय रहे।

एन.एस.जी. ने पर्यावरण संरक्षण सेवाओं के लिए सम्मानित किया

एनएसजी के अधिकारियों से सम्मान ग्रहण करते जीपीवायजी कोलकाता के समन्वयक श्री रवि शर्मा

- 594 सप्ताह में लगाए 1,62,413 पौधे
- 600वाँ रविवासरीय वृक्षारोपण कार्यक्रम 1 मई 2022 को शान्तिकुञ्ज में आयोजित होगा।
- वृक्षारोपण के साथ विगत 227 शनिवार से सतत चल रहा है साप्ताहिक स्वच्छता अभियान।

कोलकाता। पश्चिम बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता विगत 12 वर्षों से हर रविवार को वृक्षारोपण कर रहा है। 7 नवंबर 2010 से वृक्षारोपण कार्य आरम्भ हुआ। उनके द्वारा पिछले 594 रविवार में अभी तक कुल 162413 पौधे लगाए जा चुके हैं। एनएसजी (राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड) ने उनके द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे इस अतिविशिष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया। जीपीवायजी कोलकाता की ओर से श्री रवि शर्मा ने यह सम्मान ग्रहण किया। इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों ने गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे समाज निर्माण के इस कार्य के लिए भूरि-भूरि सराहना की। उन्होंने जीपीवायजी कोलकाता से जुड़े सैकड़ों युवाओं की देशभक्ति, सामाजिक निष्ठा एवं सतत सक्रियता को एक अनुकरणीय आदर्श बताया।

विविध धर्म-सम्प्रदायों की फुलवारी में महके युग निर्माणी आस्था के पुष्प

यज्ञ विज्ञान, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी आदि अभियानों पर केन्द्रित रहा 108 कुण्डीय यज्ञ

कामठी, नागपुर। महाराष्ट्र

सन् 1994 में नागपुर में सम्पन्न हुए अश्वमेध यज्ञ के बाद नागपुर ग्रामीण क्षेत्र कामठी में अभूतपूर्व 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। निकटवर्ती जिलों भंडारा, गोंदिया, चंद्रपुर, यवतमाल, वर्धा, अकोला, गडचिरोली, बुलढाणा, पांढुर्ना, मध्य प्रदेश के बैतूल तथा छत्तीसगढ़ के समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने सामूहिक पुरुषार्थ से कोरोना के कारण उत्पन्न संकटों के समाधान के प्रभावशाली प्रयास किए। पूरा कार्यक्रम आस्था संवर्धन के साथ स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बन पर केन्द्रित था।

दीपयज्ञ के अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति ने हजारों हृदयों को एक विशिष्ट उल्लास और प्रकाश से भर दिया।

सफलता का आधार

गृहे-गृहे उपासना-अंशदान

20 से 23 मार्च 2022 की तिथियों में संपन्न इस कार्यक्रम की अल्पकाल में ही शानदार तैयारियाँ की गईं। 1008 घरों में उपासना-अनुष्ठान, अंशदान के अनुबंधों के साथ दिव्य कलशों की स्थापना की गई। इन्हीं साधनासिक्त कलशों को लेकर बहिनें कलश यात्रा में शामिल हुईं।

20 मार्च को 1008 कलशों की विराट दिव्य कलश शोभायात्रा देखकर नगर वासियों ने कहा- अद्भुत, अकल्पनीय। यह लगभग 6 कि.मी. मार्ग से गुजरी। सजीव सांस्कृतिक झाँकियाँ और वृक्षारोपण, नशा मुक्ति, स्वास्थ्य संवर्धन, स्वावलंबन का अलख जगाती झाँकियाँ नगर वासियों को आकर्षित करती रहीं। सामाजिक संगठनों, मंदिर समितियों और जन सामान्य द्वारा कलश यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। मुस्लिम बहुल क्षेत्र में भी युग प्रवाह का भव्य स्वागत हुआ।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी कामठी में दीपयज्ञ में भाग ले रही अपार जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए

सर्वधर्म समभाव सम्मेलन

20 मार्च की दोपहर सांस्कृतिक व धार्मिक विविधता में एकता का परिचय देता हुआ 'सर्व धर्म समभाव' सम्मेलन हुआ। मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध व हिन्दू धर्म के विशिष्ट प्रतिनिधियों ने 'मानवता ही सच्चा धर्म' व 'स्वास्थ्य संवर्धन हम सबकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी' विषय पर अपने अभिमत रखें। शान्तिकुञ्ज के टोली नायक श्री श्याम बिहारी दुबे ने युगऋषि के सर्वहितकारी सूत्रों की व्याख्या की।

देवपूजन

देवपूजन एवं प्रथम दिन के यज्ञ में अपार जनमानस की भागीदारी रही। मंच से प्रकृति एवं मानवीय स्वास्थ्य के संतुलन और पोषण के सशक्त माध्यम के रूप में यज्ञ की व्याख्या की जाती रही। शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधियों ने सांस्कृतिक एवं शास्त्रीय दृष्टि से इसकी महत्ता बताते हुए यज्ञोपैथी को एक उभरती चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रतिपादित किया।

जनमानस पर छोड़ी गहरी छाप

कामठी शहर विविध धर्म, समुदायों की फुलवारी है। यहाँ मुस्लिम व बौद्ध धर्मावलम्बियों की बहुलता है। अंग्रेजों के समय यह छावनी थी, जिसके कारण ईसाई लोग भी बड़ी संख्या में बसे हैं। इन विविधताओं के बीच जनमानस पर गायत्री परिवार सर्वहितकारी, सब को साथ लेकर चलने वाले संगठन की छवि उभरी।

24000 दीपकों का विराट दीप महायज्ञ

22 मार्च को देव संस्कृति विवि. के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विशेष उपस्थिति में 24000 प्रज्वलित दीपों की साक्षी में दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपनी सहज शैली में वर्तमान युग के देवासुर संग्राम देवत्व के पक्ष में खड़े होने के अवसर को पहचानने और अपना मनुष्य जीवन सार्थक कर लेने का आह्वान किया।

विशिष्ट मार्गदर्शन

यज्ञ के साथ गायत्री परिवार के कुछ विशेष आन्दोलनों का विस्तृत परिचय कराते हुए बेहतर जीवन एवं सभ्य समाज के निर्माण के लिए उनमें भागीदारी करने का आह्वान किया गया। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान, यज्ञ विज्ञान व यज्ञोपैथी तथा स्वावलंबन आन्दोलनों पर चर्चा हुई। कानपुर से आए प्रतिष्ठित डॉ. श्रीमती संगीता सारस्वत व डॉ. अमरनाथ सारस्वत तथा आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की महाराष्ट्र की अभियान प्रभारी श्रीमती उमा शर्मा व उनकी टीम ने इन विषयों को पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत किया। गो विज्ञान आधारित स्वावलंबन पर भी एक प्रदर्शनी लगाई गई। युवाओं और परिजनों को इससे लाभान्वित होने की प्रेरणा दी गई।

यज्ञ के प्रयाज, निर्माण कार्य एवं व्यवस्थाओं में चंद्रपुर, भंडारा, गोंदिया, यवतमाल, वर्धा, मुलताइ (बैतूल) के कार्यकर्त्ताओं का विशेष सहयोग मिला। सैकड़ों कार्यकर्ता ने 15-15 दिन का समयदान किया। सबके सहयोग से कामठी शहर के प्रत्येक वार्ड तथा आसपास के लगभग 50 गाँवों में प्रयाज के क्रम में प्रभात फेरी, योग, प्राणायाम, ध्यान, जनसंपर्क के कार्यक्रम किए गए।

आशा हॉस्पिटल, विभिन्न सामाजिक संगठन, मंदिर समितियों तथा गायत्री शक्तिपीठ कामठी व आसपास के प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल ने उत्साहपूर्वक अपने दायित्व सँभाले।

- 200 से अधिक दीक्षा संस्कार तथा शताधिक पुंसवन संस्कार व अन्य संस्कार सम्पन्न हुए।

आत्मीयता का विस्तार

डॉ. चिन्मय जी के कामठी पहुँचने से पूरे संभाग में पारिवारिक आत्मीयता प्रगाढ़ हुई। सभी कार्यकर्त्ताओं से व्यक्तिगत रूप से मिले, उनका सहज सान्निध्य पाकर अभिभूत हो गए। कामठी के अनेक गणमान्यों के घर पहुँचकर उन्होंने देवस्थापना एवं गंगाजली की स्थापना की।

स्वानन्द पंचगव्य हेल्थ एण्ड रिसर्च सेण्टर

डॉ. चिन्मय जी स्वानन्द पंचगव्य हेल्थ एण्ड रिसर्च सेण्टर का भूमिपूजन करते हुए

भूमिपूजन »

सौंसर, गोंदिया। महाराष्ट्र

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की टोली 23 मार्च को प्रातः 7 बजे स्वानन्द गो विज्ञान केन्द्र, सौंसर पहुँची। उन्होंने वहाँ प्रस्तावित स्वानन्द पंचगव्य हेल्थ एण्ड रिसर्च सेण्टर के लिए भूमिपूजन किया। गौशाला अवलोकन एवं सप्त गौ परिक्रमा के पश्चात् उन्होंने नवनिर्मित मुख्य प्रवेश द्वार का उद्घाटन भी किया। इस अवसर पर गौशाला संचालक एवं प्रशिक्षक श्री जितेन्द्र भकने एवं डॉ. भाग्यश्री भकने द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र में देश के विभिन्न राज्यों में संचालित गोमय उत्पाद प्रशिक्षण का डिजिटल प्रस्तुतिकरण किया गया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी शक्तिपीठ कामठी के निरीक्षण के बाद कार्यकर्त्ताओं के संग एवं घर-घर देवस्थापना करते हुए

समाज की आवश्यकता और संस्कार की वैज्ञानिकता ने बढ़ाई गर्भ संस्कार की लोकप्रियता

राजस्थान पत्रिका ने डॉ. सरोज गुप्ता को सम्मानित किया

अलवर। राजस्थान

राजस्थान में प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र 'राजस्थान पत्रिका' ने अपने स्थापना दिवस कार्यक्रमों की शृंखला के अन्तर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर एक सम्मान समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वाली 25 महिलाओं को सम्मानित किया गया। गायत्री परिवार अलवर की वरिष्ठ कार्यकर्त्ता बहिन डॉ. सरोज गुप्ता को उनके द्वारा अलवर जिले में भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए चलाये जा रहे 'गर्भ संस्कार अभियान' के लिए सम्मानित किया गया।

डॉ. सरोज गुप्ता (बायें) प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

डॉ. सरोज गुप्ता अपनी व्यस्ततम व्यावसायिक दिनचर्या के बाद भी अलवर आब्स एवं गायनी सोसाइटी के साथ मिलकर अलवर शहर के साथ-साथ जिले अन्य शहर एवं कस्बों में स्त्री रोग एवं प्रसूति से संबंधित अस्पताल के विशेषज्ञ चिकित्सकों और आंगनबाड़ी से जुड़ी महिलाओं के सहयोग से पुंसवन संस्कार कराती हैं। वे प्रत्येक माह की 1 और 15 तारीख को ऑनलाइन कार्यक्रम के माध्यम से अनेक गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार का महत्व समझाती हैं। गायत्री परिवार की ओर से ऑनलाइन कार्यक्रम में गर्भकाल में विशेषज्ञ चिकित्सकों की सलाह भी उपलब्ध कराई जाती है।

मुस्लिम बहिनों की अभिरुचि

7 मुस्लिम बहिनों ने संस्कार कराया

आसनसोल। प. बंगाल

आसनसोल उपजोन द्वारा 16 मार्च को पूर्व बर्धमान जिले की नातू ग्राम पंचायत में 'सामूहिक गर्भ संस्कार' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। उपजोन समन्वयक श्री रामानुज तिवारी ने बताया कि इस कार्यक्रम में 40 बांग्ला भाषी गर्भवती बहनों ने पुंसवन संस्कार कराया। इनमें 7 बहिनें इस्लाम धर्म को मानने वाली थीं। पावर पॉइण्ट प्रेजेण्टेशन के साथ दिखाए गए गर्भ संस्कार के वैज्ञानिक पक्ष ने लोगों को बहुत प्रभावित किया।

गिरिडीह। झारखण्ड

गायत्री परिवार गिरिडीह द्वारा गत माह विवाह भवन में आयोजित सामूहिक गर्भोत्सव संस्कार कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय की महिलाएँ भी शामिल हुईं। कार्यक्रम का संयोजन गायत्री परिवार की प्रदेश प्रभारी सह समाजसेविका पूनम वर्णवाल ने किया। 65 बहिनों के संस्कार हुए। शांति भवन आश्रम की साध्वी उर्मिला बाई, महिला रोग विशेषज्ञ मेधा शर्मा, त्रिलोचन कौर मोंगिया और समाज कल्याण विभाग की सुपरवाईजर किरण राज की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

सद्विचारों के प्रकाश से जगमगा रहा है जनमन

नया अभियान

घर के द्वार पर 'नो पार्किंग' का बोर्ड, जिस पर लिखा है एक सद्वाक्य

सद्वाक्य लगाते दिया के सदस्य

झालावाड़। राजस्थान

गायत्री परिवार झालावाड़ की 'दिया' शाखा ने नगर में विचार क्रांति की एक नई मुहिम आरम्भ की है। उनके द्वारा घर के बाहर 'नो पार्किंग' के बोर्ड लगाए जा रहे हैं। हर बोर्ड पर अपने मिशन कोई न कोई क्रान्तिकारी सद्विचार लिखा होता है। इससे कई उद्देश्य पूरे होते हैं। मार्ग अवरुद्ध होने से बचता है। घर आए अतिथि को प्रवेश से पूर्व दरवाजा खुलने तक इतना समय तो मिलता ही है कि वे इस सद्विचार को पढ़ सकें। इससे सुन्दर समय का सदुपयोग क्या हो सकता है?

यज्ञ के साथ मंदिरों में लगाए सद्वाक्य

जमशेदपुर। झारखण्ड

नवयुगदल टाटानगर द्वारा सोनारी के 5 मंदिरों में 51 स्थानों पर पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखित सद्वाक्य लगाए गए। इससे पूर्व सोनारी रोड के श्री वैभव सिन्हा के माध्यम से 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के माध्यम से अनुष्ठान साधना की पूर्णाहुति की गई। संध्या समय दीप महायज्ञ प्रज्ञा महिला मंडल की बहन श्रीमती जसवीर कौर और उनकी टोली द्वारा सम्पन्न कराया गया।

बाल संस्कारशाला के बच्चों का योगदान

सोशल मीडिया पर सक्रिय है बच्चों की टोली

कोटा। राजस्थान

उम्र शरीर की होती है, हौसलों की कोई उम्र नहीं होती। रामकाज में रींछ-वानर तत्पर रहते हैं, तो नन्हीं गिलहरी का उत्साह भी कम नहीं होता। कोटा की श्रीमती रेखा पटवा एवं अन्य सहयोगी बहिनों द्वारा संचालित बाल संस्कार शाला के बच्चों का उत्साह भी कुछ ऐसा ही है। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के विशेष संदर्भ में इस संस्कारशाला से ऑनलाइन जुड़े बच्चे न केवल स्वयं संस्कारवान बन रहे हैं, बल्कि समाज के लाखों लोगों के समक्ष अपना आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह बाल संस्कारशाला प्रतिदिन सायं 7.55 से 9.00 बजे तक चलती है।

इस बाल संस्कार शाला के नन्हें बच्चे और किशोर-किशोरियाँ जूम, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से मिशन के विविध आन्दोलनों पर अपना संदेश प्रसारित करते रहते हैं। ढपली, हारमोनियम के संग उनकी सुरीली आवाज में प्रज्ञागीत बहुत प्रभावशाली होते हैं तो वहीं वे छोटे-छोटे संदेश देकर बड़े-बड़े लोगों के मर्म स्थल को भी छूते हैं। ये बच्चे अखण्ड ज्योति के संदेश से लेकर प्रज्ञागीतों के माध्यम से विचार क्रान्ति अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। साधना, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, नारी जागरण, कुरीति उन्मूलन, पर्व-त्यौहार, विशिष्ट दिवसों पर अपने संदेश प्रसारित कर यह बाल संस्कार शाला समाज निर्माण में बहुत प्रभावशाली योगदान दे रही है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

सभी को शान्ति, सद्गति प्राप्त हो, ऐसी माँ गायत्री से प्रार्थना।

श्री शम्भूदास जी, पिलानी। राजस्थान

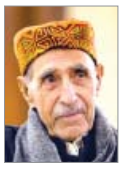

17 वर्ष (सन् 2003 से 2019) तक अंग्रेजी अखण्ड ज्योति के सम्पादक रहे श्री शम्भूदास जी 20 मार्च, 2022 को गुरुसत्ता में विलीन हो गए। वे 99 वर्ष से ज्यादा के हो गए थे। उन्होंने अखण्ड ज्योति के अलावा सुपर साइंस ऑफ गायत्री, माय लाइफः इट्स लीगसी एण्ड मैसेज, कम्पैनियन्स इन सॉलिट्यूड आदि कई पुस्तकों के अनुवाद को भी सम्पादित कर पूज्य गुरुदेव के विचारों को देश-विदेश में प्रचारित करने में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। कुछ समय पूर्व शान्तिकुञ्ज एवं मथुरा में रहकर भी समयदान किया।

श्री हेमराज शर्मा, सोलन। हिमाचल प्रदेश

रक्षा विभाग में शासकीय सेवाएँ प्रदान करते हुए भी युगऋषि के विचारों के विस्तार में अहम योगदान देने वाले समर्पित कार्यकर्त्ता श्री हेमराज शर्मा का दिनांक 1 मार्च 2022 को 61 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे ग्राम धुन्दन के मूल निवासी थे। मिशन की सेवा-साधना के संस्कार उन्हें अपने पिता श्री लेखराम शर्मा से मिले जो सन् 1977 से ही हिमाचल प्रदेश एवं पूरे पश्चिमोत्तर जोन में मिशन के प्रचार-विस्तार में समर्पित भाव से सक्रिय हैं।

श्री प्रकाश श्रीवास्तव एवं श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता

गुना। मध्य प्रदेश

गुना में संगठन एवं प्रबन्धन कार्यों से जुड़े दो वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का 3 फरवरी 2022 को देहावसान हो गया। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक श्री प्रकाश श्रीवास्तव और गायत्री शक्तिपीठ गुना के पूर्व व्यवस्थापक श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के साथ एकाकार हो गए।

सद्ग्रंथ स्थापना अभियान

अनुष्ठान की पूर्णाहुति के संग सद्ग्रंथ स्थापना अभियान का शुभारम्भ हुआ

जोबट, अलीराजपुर। म.प्र.

जोबट में 40 दिवसीय साधना अनुष्ठान करने वाले साधकों ने 3 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ साधना की सामूहिक पूर्णाहुति की। इसके साथ ही उन परिवारों के सहयोग से सद्ग्रंथ स्थापना का अभियान भी आरंभ हो गया। अनुष्ठान कर्त्ताओं के सहयोग से 28 परिवारों में सद्ग्रंथ साहित्य के सेट स्थापित किए गए।

जोबट में सद्ग्रंथ स्थापना कराते भाई-बहिन

डॉ. शिव नारायण सक्सेना के अनुसार नगर और जिले में सद्ग्रंथ स्थापना का यह पहला कार्यक्रम था। स्थापना से पूर्व यजमानों ने मस्तक पर साहित्य रखकर शोभायात्रा भी निकाली। डॉ. सक्सेना ने बताया कि उनके मार्गदर्शन में 'नारी जागरण' के लक्ष्य के साथ यह सेट तैयार किए गए थे। साहित्य स्थापना का यह अभियान आगे निरन्तर गतिशील होता रहेगा।

108 सद्ग्रंथ स्थापना हुई, 1008 स्थापना के संकल्प उभरे

भावनगर। गुजरात

गायत्री परिवार भावनगर द्वारा होली से पूर्व आयोजित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में 108 घरों में सद्ग्रंथ साहित्य सेट की स्थापनाएँ हुईं। इस यज्ञ में जनउत्साह को देखते हुए अब 1008 घरों में साहित्य सेट स्थापित कराने का नया संकल्प उभरा है।

भावनगर का यह महायज्ञ संस्कारों की दृष्टि से भी बहुत सफल रहा। प्रथम दिन लगभग 20 बहिनों ने पुंसवन संस्कार कराए, जबकि यज्ञ के दूसरे दिन लगभग 30 से 40 दीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार हुए। फाल्गुन पूर्णिमा-होली के दिन बसंत पंचमी से होली तक सवा लक्ष गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान करने वाले साधकों ने अपने अनुष्ठान की पूर्णाहुति की।

मनावर, धार। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ मनावर द्वारा गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना अभियान के अन्तर्गत 24 घरों में एक साथ एक ही दिन यज्ञ कराए गए। कार्यक्रम संस्कार एवं नारी जागरण प्रधान थे। सभी यजमानों को परिवार के सभी सदस्यों के संस्कार युग निर्माण योजना की प्रगतिशील परम्परा के साथ कराने एवं नियमित उपासना साधना से वातावरण में सात्विकता का संचार करते रहने की प्रेरणा दी गई। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री स्वप्निल शर्मा, श्रीमती अभिलाषा नामदेव, श्रीमती माधुरी जोशी, श्री राजेश व्यास, श्री दिनेश पटेल आदि थे।

मनावर : गृहे-गृहे यज्ञ से पूर्व निकली सद्ग्रंथ शोभायात्रा

नई बाल संस्कारशाला का शुभारम्भ

डिहरिया, विश्रामपुर, पलामू। झार.

युवा मण्डल डिहरिया ने हरहेप्पा ग्राम में नई बाल संस्कार शाला का शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री राजन पाण्डेय और श्रीअनन्त सिंह, एएसआई मुख्य अतिथि थे। युगऋषि के सपनों को साकार करने में अग्रदूत की भूमिका निभा रहे योगेश, रुद, आनन्द, राहुल, पंकज, आलोक इत्यादि ने गरीब, वंचितों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारवान बनाने के लिए भरपूर प्रयास करते रहने का आश्वासन गाँववालों को दिया।

युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए मोटिवेशनल कक्षाओं का शुभारम्भ

मोटिवेशलन कक्षा : कथारा में आरम्भ हुए युवाओं को गढ़ने के नए प्रयास

कथारा, बोकारो। झारखण्ड

13 फरवरी 2022, रविवार से गायत्री ज्ञान मंदिर, कथारा में युवाओं के व्यक्तित्व विकास के अभिनव प्रयासों के अन्तर्गत नियमित मोटिवेशनल कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। गोमियो प्रखण्ड प्रभारी श्री पंचदेव प्रसाद यादव ने 13 फरवरी को गायत्री ज्ञान मंदिर पर आयोजित यूथ मोटिवेशलन सेमीनार में इस आशय की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गायत्री परिवार के युवा कार्यकर्त्ता श्री पंकज कुमार सिंह स्नातकोत्तर शिक्षक ने गत गणतंत्र दिवस पर युवाओं के चरित्र निर्माण के लिए नियमित कक्षाएँ आरंभ करने का निश्चय किया था। ये कक्षाएँ प्रत्येक रविवार को होंगी।

यूथ मोटिवेशनल सेमीनार का शुभारम्भ उप प्रबंधक सी. एस.आर. श्री चंदन कुमार ने दीप प्रज्वलन कर किया। अनेक युवक-युवतियों ने चरित्र निर्माण सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किए। डी.ए.वी. कथारा के वरिष्ठ शिक्षक श्री जितेन्द्र कुमार ने उत्साहवर्धक प्रेरणाएँ दीं। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्रा कुमारी पूनम ने अपने अनुभवों से सभी को उत्साह एवं उमंगों से भर दिया।

जिस घर में स्त्रियाँ सुसंस्कारी, मृदुभाषी एवं परिश्रमी होती हैं, उस घर में दरिद्रता प्रवेश नहीं कर सकती, न ही विग्रह होते हैं।

40 वर्षों से प्रतिदिन संस्कार शाला चला रहे थे बाबा वासुदेव दास

109 वर्ष की उम्र में हुआ निधन

- **परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के प्रति थी अपार श्रद्धा**
- **समाज को अनेक विभूतियाँ दीं**
- **श्री भैरोसिंह शेखावत के सहपाठी थे**

कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान

भरतपुर जिले की कुम्हेर तहसील के गाँव 'नगला मना' पहाड़ वाले बाबा वासुदेव दास का फरवरी 22 में देवलोकगमन हो गया। वे पिछले 40 वर्षों से गाँव के समीप पहाड़ी पर स्थित अपने आश्रम में ही प्रतिदिन दो घंटे संस्कारशाला चला रहे थे। जाति-धर्म के भेद के बिना वे आने वाले हर बच्चे को शिक्षा देते थे। उनकी संस्कार शाला में पढ़े अधिकतर व्यक्ति न केवल नशों से दूर रहे, बल्कि प्रभावशाली भी बने। श्री आर.सी. वर्मा आईएएस, राजस्थान सरकार में मंत्री रहे श्री नत्थी सिंह, श्री किशोर सिंह फौजदार सी. आई. पुलिस, श्री जग्गोराम जाटव उनकी संस्कारशाला के विद्यार्थी रहे।

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती में यज्ञीय ऊर्जा से अनुप्राणित हुए नए-नए क्षेत्र

जिले में 24 कुण्डीय यज्ञ शृंखला

रायगढ़। छत्तीसगढ़

5 मार्च से पूरे रायगढ़ जिले में 24 कुण्डीय यज्ञों की शानदार शृंखला चल पड़ी। जिला संगठन के प्रयासों से एक से बढ़कर एक सफल कार्यक्रम सम्पन्न हुए। लाखों लोगों तक युग संदेश पहुँचा, लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने के प्राणवान प्रयोग सम्पन्न हुए। इन कार्यक्रमों के संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री राजकुमार भृगु की टोली पहुँची थी।

रायगढ़ जिले का सर्वप्रथम 24 कुण्डीय यज्ञ सारंगढ़ क्षेत्र के ग्राम गोंड़ा में दिनांक 5 से 8 मार्च 2022 की तिथियों में सम्पन्न हुआ। 9 से 12 मार्च तक दुर्गा मंच के समक्ष बरमकेला में, 13 से 16 मार्च तक गांधी गंज रायगढ़ में सम्पन्न हुआ। होली के दिनों 17 से 19 मार्च तक तीन दिवसीय पावन प्रज्ञा पुराण कथा का भव्य आयोजन ग्राम बिलाईगढ़ में रखा गया था। 20 और 21 मार्च को खरसिया ब्लॉक के ग्राम सोड़का में पावन प्रज्ञा पुराण का कथा का अत्यंत लोकप्रिय आयोजन हुआ। सभी कार्यक्रमों में संस्कारों के प्रति लोगों का खूब आकर्षण देखा गया।

बनमनखी, पूर्णिया की कलश यात्रा एवं यज्ञ

प्रयागराज में निकली कलश यात्रा

कुंवरदा, सूरत में सद्ग्रंथ स्थापना

बीजलां, अलवर में व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ की प्रेरणा देते मुख्य यजमान

स्वर्ण जयन्ती यज्ञ शृंखला

अशोक नगर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अशोकनगर द्वारा शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को एक नए गाँव में सार्वजनिक यज्ञ करने का निर्णय लिया गया है। प्रथम आयोजन ग्राम गोरा (सोनेरा) में 27 फरवरी 2022 को आयोजित हुआ। गाँव के 25 जोड़ों एवं अन्य ग्रामवासियों ने इसमें भाग लेते हुए मानव कल्याण के लिए यज्ञ आहुतियाँ समर्पित कीं। यज्ञोपरांत यज्ञ स्थल पर 5 पौधों का रोपण किया गया। इस कार्यक्रम में पटेल गजराजसिंह, हरिचरण शर्मा, पुजारी सुरेश शर्मा एवं समस्त ग्रामवासियों का सहयोग रहा। संवाददाता श्री अमर सिंह रघुवंशी ने बताया कि यज्ञ में गाँववासियों को देवदक्षिणा स्वरूप नशामुक्ति के संकल्प भी कराए गए। कई लोगों ने नियमित उपासना करने का व्रत लिया। सभी को संस्कार परम्परा की जानकारी दी गई।

500 लोगों ने दीक्षा ली

बनमनखी, पूर्णिया। बिहार

गायत्री परिवार बनमनखी ने मार्च के द्वितीय सप्ताह में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन कर सैकड़ों परिवारों को गायत्री महाविद्या से अनुप्राणित करने में सफलता पाई। लगभग 500 लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार भी बड़ी संख्या में हुए।

कार्यक्रम संचालन हेतु शान्तिकुंज से श्री संदीप पाण्डे की टोली पहुँची थी। उन्होंने वेदमाता, विश्वमाता, देवमाता गायत्री की मनुष्य में देवत्व जगाने की सामर्थ्य पर विस्तृत प्रकाश डाला। सद्ग्रंथ शोभायात्रा कलश यात्रा का मुख्य आकर्षण रही। सैकड़ों परिवारों ने देवस्थापना एवं सद्ग्रंथ स्थापना कराई। रंजीत कुमार गुप्ता, चंद्रेश्वरी मण्डल, त्रिवेणी गुप्ता, गुड्डू चौधरी, संतोष चौधरी आदि अनेक लोगों ने इस कार्यक्रम की सफलता में अपना शानदार योगदान दिया।

नए क्षेत्रों में विस्तार

आमगाँव, गोंदिया। महाराष्ट्र

11 से 13 मार्च की तारीखों में एक छोटे-से गाँव किकरीपार में आयोजित पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ युग चेतना विस्तार की दृष्टि से एक शानदार कार्यक्रम सिद्ध हुआ। यह गायत्री परिवार आमगाँव के सहयोग से आयोजित किया गया था।

प्रथम दिन आयोजित रक्तदान शिविर में 56 यूनिट रक्तदान हुआ। इस दिन आयोजित युवा सम्मेलन में गाँववासी युवाओं को अपने गाँव के उत्थान के लिए आदर्श परम्पराओं को अपनाने और अपने श्रम-पुरुषार्थ से विकास-परिष्कार की नई-नई संभावनाएँ विकसित करने की प्रेरणा दी गई।

अगले दिन 12 मार्च को गाँव में भव्य कलश यात्रा निकली, जिसने पूरे गाँव में व्यसनमुक्ति और महिला जागृति का सशक्त शंखनाद किया। जीवन साधना एवं नारी जागरण पर विशेष संदेश दिया गया। अंतिम दिन पूर्णाहुति के समय 42 भाई-बहिनों ने दीक्षा ली। पूरे कार्यक्रम में युग साहित्य प्रदर्शनी लोगों के आकर्षण का केन्द्र रही।

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश

गायत्री प्रज्ञापीठ मदरामुकुन्दपुर मेजा, प्रयागराज के प्रांगण में 5 से 8 मार्च 2022 तक नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ संचालक एवं आयोजकों ने युवा पीढ़ी को युगऋषि की प्रेरणा के अनुरूप दिशा देने का सफल प्रयास किया। अनेक भाइयों ने तरह-तरह का नशा, निंदा जैसी बुरी आदतों को छोड़कर साधना पथ पर चलते हुए अपना जीवन सँवारने के संकल्प लिए। 9 दीक्षा, 5 विद्यारंभ, 2 पुंसवन संस्कार हुए। आयोजकों ने 50 घरों में देवस्थापना कर उन्हें मिशन से जोड़ने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम की कलश यात्रा श्री रमाशंकर द्विवेदी मिजार्पुर के नेतृत्व में निकाली गई। यज्ञाचार्य एवं कथावाचक श्रीमती रीता त्रिपाठी देवरिया थी । यज्ञ का संचालन गायत्री प्रज्ञापीठ के संचालक श्री रामाश्रम त्रिपाठी ने किया।

वनवासियों में नवजागृति

तामिया, छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

दिनांक 13 मार्च 22 को विकास खंड तामिया के विश्व प्रसिद्ध पातालकोट के भारिया जनजाति के लोगों के बीच 5कुंडीय यज्ञ संपन्न हुआ, जो दो दिन चला। इसमें 12 गाँवों से आए श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

जिला साधना प्रभारी श्री हिम्वे एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री अमरुते ने यज्ञ संचालन करते हुए क्रान्तिकारी युग संदेश दिया, जिसके प्रभाव से 20 बच्चों का विद्यारंभ संस्कार एवं 10 युवाओं का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। 20 बच्चों ने मंत्र लेखन का संकल्प लिया। 10 भाइयों ने जेब से गुटका के पाउच गुरुदेव के चरणों में समर्पित करते हुए कभी नशा न करने का संकल्प लिया। श्रीमती संध्या नागवंशी ने पातालकोट की सभी बहिनों को गायत्री परिवार के साथ समाज सुधार के कार्यों के लिए आगे आने की प्रेरणा दी।

व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ

बींजला, अलवर। राजस्थान

तहसील कठूमर के ग्राम बींजला में दिनांक 1 मार्च से 4 मार्च तक प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। यह कथा बींजला ग्रामवासी श्री नरेश सिंह अध्यापक ने 'व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ' के सिद्धांत पर चलते हुए अपनी माता जी के देवलोकगमन के बाद उनकी आत्मशान्ति के लिए अपने आवास पर आयोजित की थी। श्री नरेश सिंह ने माँ के मरणोत्तर संस्कार में मृतकभोज न कर प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से अपने तथा आसपास के गाँवों के सैकड़ों लोगों को देव परिवार एवं श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए प्रेरित किया।

यह कथा क्षेत्र के लोकप्रिय कथाकार श्री श्याम सुन्दर शर्मा ने कही। उन्होंने सनातन एवं प्रगतिशील परिवार व्यवस्था, संस्कार परम्परा पर प्रकाश डाला। उन्होंने लोगों को सामाजिक कुरीतियों को त्यागकर सुखपूर्वक जीवन जीने की प्रेरणाएँ भी दीं।

श्री नरेश सिंह ने इस अवसर पर कांकरौली में निमार्णाधीन गायत्री प्रज्ञा पीठ तथा गायत्री तपोभूमि मथुरा में मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए अनुदान दिया।

कुंवारदा, सूरत। गुजरात

6 मार्च 2022 से कुंवरदा में 24 कुण्डीय यज्ञ आरम्भ हुआ। प्रथम दिन मस्तक पर कलश एवं सद्ग्रंथ उठाये लगभग 400 भाई-बहिनों ने गाजे बाजे एवं पूरे उत्साह के साथ कलश एवं सद्ग्रंथों की शोभायात्रा निकाली। इस यात्रा में 1000 से अधिक गाँववासी शामिल हुए। सायंकाल गरबा करते हुए गाँववासियों ने अपनी भक्तिभावना का परिचय दिया।

अगले दिन 24 कुण्डीय गायत्री यज्ञ में 1200 लोगों ने यज्ञाहुतियाँ प्रदान कर विश्व शान्ति एवं लोकमंगल की कामना की। पूरे कार्यक्रम में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने देवस्थापना एवं सद्ग्रंथ स्थापना अभियान को घर-घर तक पहुँचाने एवं मिशन की पत्रिकाओं के सदस्य बनाने पर बल दिया।

काशी में बढ़ती गायत्री यज्ञ अभियान की लोकप्रियता

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव की दीक्षाभूमि, जहाँ उन्हें पं. मदनमोहन मालवीय जी ने दीक्षा दी थी, में 6 मार्च को काशी हिंदू विश्वविद्यालय मंडल द्वारा आयोजित 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं को युगऋषि का जीवन दर्शन उनकी जन्मभूमि, तपोभूमि व कर्मभूमि के परिचय के संग बताया गया। करोड़ों गायत्री उपासकों की आस्था के केन्द्र शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार एवं उसकी स्वर्ण जयन्ती का विशेष परिचय भी दिया गया। शक्तिपीठ युवा प्रकोष्ठ द्वारा लगाई गई युग साहित्य प्रदर्शनी लोगों को आकर्षित रही।

यज्ञ का संचालन गायत्री शक्तिपीठ, नगवां की बहिनों ने किया। लगभग 500 से अधिक परिजनों ने बारी बारी से यज्ञ में प्रतिभाग किया। श्रद्धालुओं ने कहा कि दीक्षाभूमि ने आचार्य जी को महामानव बना दिया, उस भूमि पर यज्ञ के माध्यम से विराट चेतना से जुड़ना हमारे जीवन का परम सौभाग्य है।

5 मार्च 2022 को चितईपुर, वाराणसी में सुप्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ डॉ.एस.पी.सिंह एवं श्रीमती उषा किरण सिंह के निवास पर पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं विराट दीप महायज्ञ किया गया। शक्तिपीठ नगवां की टोली ने लोगों को युगऋषि के विचार शरीर-उनके साहित्य के साथ जोड़ने का सफल प्रयास किया, युग साहित्य प्रदर्शनी लगाई। कार्यक्रम में चितईपुर, डी.एल.डब्ल्यू. सहित क्षेत्रीय मंडलों का विशेष योगदान रहा। सैकड़ों की संख्या में स्वजनों ने प्रतिभाग किया।

गायत्री शक्तिपीठ नगवां, लंका द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में प्रति सप्ताह युग साहित्य प्रदर्शनी लगाई जाती है और जिसके सुपरिणाम भी दिखने प्रारंभ हो चुके हैं।

दिनांक 05 मार्च को गायत्री शक्तिपीठ नगवां, लंका, वाराणसी से जुड़े यू.पी. कॉलेज मंडल एवं शिवपुर मंडल द्वारा रूद्रा ऐश्वर्यम अपार्टमेंट, शिवपुर में पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने प्रतिभाग किया। गायत्री परिवार वाराणसी के वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री विंध्याचल सिंह की उल्लेखनीय उपस्थित रही। साहित्य स्टॉल व्यवस्था में पांडेयपुर, कोनिया एवं शैलपुत्री मंडल के सृजन सैनिकों का विशेष योगदान रहा।

जलालीपुरा, वाराणसी स्थित हनुमान मंदिर पर 4 मार्च को 3 कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ। यज्ञ में स्थानीय मंडल संग शैलपुत्री, कोनिया, शिव मंदिर, ऑक्सफोर्ड मंडल से काफी संख्या में स्वजन उपस्थित रहे।

मोहनसराय क्षेत्र में दिनांक 11 से 13 मार्च की तिथियों में प्रथम बार श्रीमद् पावन प्रज्ञा पुराण कथा एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। इसे रामनगर मण्डल के परिजनों द्वारा प्रथम बार नए परिजनों की समिति बनाकर किया गया। 70 से अधिक लोगों ने दीक्षा ली। 2500 से अधिक श्रद्धालुओं ने 2400 दीपकों संग संपन्न भव्य दीपमहायज्ञ में भाग लिया।

अग्निकाण्ड पीड़ित परिवारों तक राहत सामग्री पहुँचाई

पीड़ित परिवारों को राहत सामग्री प्रदान करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

हरिद्वार। उत्तराखण्ड : 23 मार्च को हरिद्वार स्थित वैरागी कैम्प के झुग्गी- झोपड़ियों में आग लगी थी। अग्निकाण्ड पीड़ितों का दुःख-दर्द बँटाने के लिए शान्तिकुञ्ज ने तत्परता दिखाई। श्रद्धेया शैल दीदी ने शान्तिकुञ्ज के आपदा प्रबंधन दल को आवश्यक सहायता सामग्री एवं निर्देश देकर अविलम्ब पीड़ितों की सहायता के लिए रवाना किया।

आपदा राहत टीम श्री महेन्द्र शर्मा, व्यवस्थापक शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में राहत सामग्री के पैकेट लेकर वैरागी कैम्प पहुँची। सर्वे के

शान्तिकुञ्ज समाचार

बाद 60 परिवारों को एक-एक राहत पैकेट प्रदान गया। प्रत्येक पैकेट में 5 कि.ग्रा. आटा, 5 कि.ग्रा. चावल, एक-एक किलो खाद्यतेल, दाल, नमक, अन्य मसाले सहित एक-एक तिरपाल दिया गया है। बस्ती में रहने वाले एक पीड़ित परिवार की पुत्री के विवाह हेतु विशेष राहत सामग्री भी दी गई।

शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने बताया कि बस्ती में आग लगने से कई गरीबों के घर और आशियाना जल कर खाक हो गये, जो बेहद ही दुःखदायी है। गायत्री परिवार सदैव ऐसी दुःखदायी परिस्थितियों में पीड़ितों की सहायता के लिए तत्पर रहा है। श्रद्धेया शैलदीदी ने पीड़ित परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की और कहा कि पीड़ितों की सेवा करना मानवता का धर्म है।

गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा

मुख्य आकर्षण - सद्ग्रंथ स्थापना

सिमरी बख्तियारपुर, मधेपुरा। बिहार

गायत्री शक्तिपीठ सिमरी बख्तियारपुर की प्राण प्रतिष्ठा तीन दिवसीय समारोह के साथ हुई। 13 से 15 मार्च 2022 तक के तीन दिवसीय कार्यक्रम में सद्ग्रंथ स्थापना आकर्षण का केन्द्र रही। कार्यक्रम संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री विनय केशरी की टोली पहुँची थी।

महायज्ञ का उद्घाटन मधेपुरा के सांसद श्री दिनेश चंद्र यादव, पूर्व विधायक डॉ. अरुण कुमार, प्रखंड प्रमुख सुश्री शबनम कुमारी ने दीप प्रज्वलन कर किया। अतिथि स्वागत एवं उनके द्वारा ध्वजारोहण के उपरांत सांसद महोदय ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है और संतों की वाणी से मन का क्लेश दूर होता है।

251 कुमारी कन्याओं द्वारा सिर पर मंगल कलश धारण कर शोभायात्रा निकाली गई, जिसने पूरे नगर का भ्रमण करते हुए नगरवासियों को कार्यक्रम का आमंत्रण दिया।

गायत्री चेतना केन्द्र का शुभारम्भ

अलवर। राजस्थान : दिनांक 19 मार्च को श्याम नगर स्थित श्री ज्ञानेंद्र शर्मा द्वारा संचालित प्रज्ञा मण्डल और श्रीमती ज्ञान देवी शर्मा द्वारा संचालित महिला मंडल के सहयोग से श्याम नगर, सिल्वर ओक स्कूल के सामने, श्याम नगर में पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें मानव मात्र एक समान के भाव के साथ हर वर्ग और धर्म के सैकड़ों नागरिकों ने भाग लिया।

19 मार्च के इस यज्ञ के साथ श्याम नगर में गायत्री चेतना केन्द्र का शुभारम्भ हो गया। यज्ञ में युवा मण्डल का गठन करने व आपसास के क्षेत्रों में नए मण्डल गठन कर गायत्री चेतना केन्द्र से जोड़ने के संकल्प की घोषणा की गई। यज्ञ का संचालन श्री सतीश सारस्वत, श्री जे.पी. गुप्ता एवं श्री महेंद्र सिंह नरुका की टोली ने किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

'नशा मुक्त उत्तराखण्ड, संस्कार युक्त उत्तराखण्ड' के लिए समर्पित रहा

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के तत्वावधान में दिनांक 23 मार्च से 29 मार्च 2022 तक माँ सरस्वती पब्लिक सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, बहादराबाद, हरिद्वार में राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष शिविर आयोजित किया गया। शिविर का विषय था 'नशा मुक्त उत्तराखण्ड, संस्कार युक्त उत्तराखण्ड'। इसमें 275 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने प्रतिदिन योग, यज्ञ, वृक्षारोपण, व्यसन मुक्त और संस्कार युक्त उत्तराखण्ड, जागरूकता अभियान, स्वच्छता जैसे जागरूकतापरक कार्यक्रमों में भाग लिया। आसपास के कई गाँवों में सफाई, नशामुक्ति जागरूकता, दीवार लेखन के कार्यक्रम किए गए। आस-पास के विद्यालयों में दे.सं.वि.वि. के छात्र-छात्राओं ने जीवन प्रबंधन के सूत्र समझाये। 'नशा मुक्त उत्तराखण्ड, संस्कार युक्त उत्तराखण्ड' विषय पर प्रबुद्धजनों के व्याख्यान व बौद्धिक कार्यक्रम हुए।

शिविर के मध्य प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी जी तथा दे.सं.वि.वि. के कई अधिकारी पहुँचे, टीम का उत्साह व मनोबल बढ़ाया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला समन्वयक श्री.एस.पी.सिंह जी द्वारा शिविर का समापन किया गया। इस अवसर पर बेहतर कार्य करने वाले स्वयंसेवियों, कार्यक्रम अधिकारियों एवं पूरी टीम को सम्मानित किया गया। ग्रुप समन्वयक डॉ. उमाकान्त इंदौलिया ने कार्यक्रम की उपलब्धियों व कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया, सभी का आभार व्यक्त किया।

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी एवं विद्यार्थियों द्वारा निकाली गई जागरूकता रैली

टिकाऊ पर्यटन एवं पारिस्थितिकीय प्रणाली पर कार्यक्रम

पर्यटन की धरोहरों को उनके मूल रूप में अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने की योजना पर चर्चा हुई

कार्यशाला में भाग ले रहे डॉ. पाराशर, श्री बलदाऊ देवांगन, डॉ. उमाकांत इंदौलिया

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पर्यटन विभाग ने यूसर्क देहरादून के साथ मिलकर 'सीखने के सहयोगात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए सतत पर्यटन और पारिस्थितिकी तंत्र संचार पद्धति' विषय पर कार्यशाला आयोजित की। पर्यटन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरुणेश पराशर ने कार्यशाला के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह टिकाऊ पर्यटन के माध्यम से पर्यटन की धरोहरों को अगली पीढी तक मूल दशा में स्थानान्तरित करने की योजना है। इससे आर्थिक लाभ एवं संस्कृति संरक्षण के दोनों उद्देश्य पूरे होते हैं।

कार्यशाला में टिकाऊ पर्यटन के वैज्ञानिक उपाय, सूर्य की शक्ति एवं हरियाली का महत्व जैसे विषयों पर चर्चा हुई। डॉ. भावतोश शर्मा ने इको सिस्टम एवं बेहतर पर्यावरण के बारे में चर्चा की। डॉ. पुष्पेन्द्र शर्मा ने सॉलिड वेस्ट मैनेजमेन्ट का पर्यटन में उपयोग समझाया। कार्यशाला में टिकाऊ पर्यटन के प्रेजेण्टेशन एवं पोस्टर प्रतियोगिता हुई।

कार्यक्रम के समापन सत्र में कुलपति शरद पारधी जी ने परम पूज्य गुरुदेव की पुस्तक 'सुनसान के सहचर' के उदाहरणों से बताया कि कैसे प्रकृति के तत्त्वों यथा पर्वत, नदी, वन, उपवन इत्यादि से सुन्दर संवाद स्थापित किया जा सकता है।

प्रान्तीय युग सृजेता समारोह, श्रावस्ती के लिए कमर कसी

प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर की शानदार उपलब्धियाँ

शिविर के मुख्य वक्ता-केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे, श्री आशीष सिंह और प्रान्त के कर्मठ प्रतिभागी कार्यकर्त्तागण

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

नवम्बर 2022 में श्रावस्ती में होने जा रहे प्रान्तीय युग सृजेता समारोह की तैयारियों के अन्तर्गत दिनांक 11 से 15 मार्च की तिथियों में सुल्तानपुर में प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। उत्तर प्रदेश के 36 जिलों से आये 160 युवाओं ने इसमें भाग लिया। शान्तिकुञ्ज से युवा संगठन प्रभारी श्री के.पी. दूबे, श्री आशीष सिंह, उत्तर प्रदेश जोन प्रभारी श्री नरेंद्र ठाकुर एवं प्रदेश के कुशल नायक सर्वश्री प्रभाकर सक्सेना, कैलाश तिवारी, जय प्रकाश वर्मा, आदित्य आदि ने उनका मार्गदर्शन किया।

प्रतिभागी युवाओं ने अपने-अपने जिले में युग निर्माणी विचारधारा से युवाओं को जोड़ने का सशक्त अभियान चलाने तथा समृद्ध-सशक्त राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया।

शिविर के अंतिम दिन नवजीवन हॉस्पिटल द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। विदाई से पूर्व पौधरोपण का कार्यक्रम भी रखा गया था। इस शिविर में जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह, डॉ. रमेश ओझा, विश्व नाथ तिवारी, प्रमोद सिंह, विक्रम, रितेश अग्रवाल, सचिदानन्द सिंह सोनू, अभिषेक सिंह सहित अनेक युवा कार्यक्रम की जिम्मेदारियाँ बड़ी लगन और उत्साह के साथ सँभालते दिखाई दिए।

विशिष्ट निर्धारण

- 27,600 पुस्तिकाएँ मंत्रलेखन कराने का संकल्प हुआ। 5000 मंत्रलेखन पुस्तिका तत्काल वितरित हो गई।
- ब्लॉक स्तरीय व जिला स्तरीय युवा सम्मेलनों की रूपरेखा बनी। जिला स्तरीय कार्यक्रम संचालन के लिए 25 विशेष प्रवक्ताओं का चयन हुआ। ये सम्मेलन 15 मई से 20 जून के बीच होंगे।
- 20 कार्यकर्त्ताओं ने युग सृजेता श्रावस्ती के लिए एक माह के समयदान का संकल्प लिया।
- 175 क्षेत्रीय टोलियाँ बनीं, 20 मार्च को केन्द्र द्वारा उन्हें ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया।

हर गाँव में होंगे दीपयज्ञ

देवघर। झारखण्ड :

गायत्री शक्तिपीठ डावर ग्राम देवघर में 40 दिवसीय अनुष्ठान की सामूहिक पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर देवीपुर पंचायत के सभी ग्रामों में साधना एवं यज्ञ की ऊर्जा को दीपयज्ञों के माध्यम से पहुँचाने का निर्णय लिया गया। जिला समन्वयक श्री उपेन्द्र कुमार कर्ष ने बताया कि 24 कुडीय यज्ञ के प्रयाज के रूप में भी इन कार्यक्रमों को आयोजित किया जाएगा।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई शांति एवं सुलह संस्थान की स्थापना

विश्वशान्ति के प्रयासों में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशेष भूमिका होगी, यह जानकर प्रसन्नता हुई। - माननीय श्री वेंकैया नायडू, भारत के उपराष्ट्रपति

भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री वेंकैया नायडू19 मार्च को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में चल रही व्याख्यानमाला में पधारे। इस अवसर पर देसंविवि में दक्षिण एशियाई शांति एवं सुलह संस्थान का उद्घाटन किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि विश्व शान्ति चाहता है। मुझे प्रसन्नता है कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने इस दिशा में पहल की है। अपने देश को स्वामी विवेकानन्द, सम्राट अशोक, महात्मा गाँधी के सपनों का देश बनाना है। प्रसन्नता की बात है कि इस दिशा में आपकी विशेष भूमिका होगी। इस अवसर पर उत्तराखण्ड के राज्यपाल माननीय लेफ्टिनेण्ट जनरल (से.नि.) गुरमीत सिंह और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलसचिव श्री बलदाऊ जी उनके साथ उपस्थित थे।

मंच पर पुस्तक 'उत्सर्ग' का विमोचन करते माननीय राज्यपाल, माननीय उपराष्ट्रपति जी एवं प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देसंविवि के मृत्युंजय सभागार में शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में विशेष व्याख्यान रखा गया था। माननीय उपराष्ट्रपति जी, माननीय राज्यपाल महोदय एवं मंचासीन गणमान्यों ने देवपूजन-दीप प्रज्वलन के साथ उसका शुभारम्भ किया। राष्ट्रगान, देसंविवि के कुलगीत एवं स्वागतोपरांत गणमान्यों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

स्वागत विमोचन :

अतिथियों का आभार व्यक्त करने के पश्चात् मंच पर प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री मंत्र चादर, गंगाजली, युग साहित्य एवं स्मृति चिह्न भेंटकर उपराष्ट्रपति जी एवं राज्यपाल जी को सम्मानित किया। उपराष्ट्रपति जी ने देसंविवि की नवीनतम वेबसाइट, प्रज्ञायोग प्रोटोकॉल एवं 'उत्सर्ग' पुस्तक का विमोचन किया।

शिक्षा का आधार हो- नेचर, कल्चर फॉर बैटर फ्यूचर

– श्री वेंकैया नायडू, उपराष्ट्रपति जी

शिक्षा का अभाव हमारे सांस्कृतिक पराभव का मूल कारण है। इसी कारण आत्महीनता का अनुभव होता रहा और हम आक्रांताओं को श्रेष्ठ मानकर उनका अनुसरण करते रहे। हमें इस अवधारणा से बाहर निकलना होगा। हमें अपनी प्रकृति और पैरेण्ट के साथ तालमेल बिठाना होगा। नेचर, कल्चर फॉर बैटर फ्यूचर हमारी शिक्षा का आधार होना चाहिए।

शान्तिकुञ्ज, देसंविवि में दिव्यता की अनुभूति होती है

– मेजर जनरल (से.नि.) गुरमीत सिंह,

देसंविवि-शान्तिकुञ्ज की यह कर्मभूमि कुछ खास है। यहाँ एक मंदिर जैसी अनुभूति होती है, प्रेम, सद्भाव, आत्मीयता की अनुभूति होती है। शान्तिकुञ्ज में अखण्ड ज्योति और समाधि स्थल के दर्शन करते हुए दिव्य चेतना की अनुभूति होती है और जब मैं गायत्री मंत्र का जप करता हूँ तो अंतःकरण में अखण्ड ज्योति की आत्मा अनुभव होने लगती है।

हिमालय बनो, गढ्ढा नहीं

– डॉ.चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति

भारत दधीचि, आरुणी, उद्दालक, एकनाथ जैसे ऋषियों-संतों की भूमि है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से पूरे विश्व में शान्ति और सद्भाव के लिए प्रयास करती रही है। परम पूज्य गुरुदेव धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संकल्प लेकर आए हैं। देसंविवि में दक्षिण एशियाई शान्ति एवं सुलह संस्थान की स्थापना उन ऋषि-मनीषियों के बताए सूत्रों के व्यापक विस्तार के साथ मानवता को संदेश देगा कि बनना है तो हिमालय बनो, गड्ढा बनने में किसे आनन्द आता है।

उपराष्ट्रपति जी एवं राज्यपाल महोदय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से चर्चा करते हुए

ऋषियुग्म के स्मारक-अखण्ड दीप के दर्शन

माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू एवं राज्यपाल ले.ज. (सेनि) श्री गुरमीत सिंह परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के सूक्ष्म प्रतीक-अखण्ड दीप के दर्शन करने और श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट करने शान्तिकुञ्ज आए। श्रद्धेयद्वय ने अतिथियों का भावभरा स्वागत किया, कुशलक्षेम जानने के बाद उनके स्वस्थ जीवन-दीर्घ आयुष्य की कामना की। राष्ट्र की प्रगति व समृद्धि में वे भरपूर योगदान देते रहें, ऐसी प्रार्थना माँ भगवती गायत्री से की।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय दिग्दर्शन

दक्षिण एशियाई शांति एवं समन्वय संस्थान के उद्घाटन के बाद अतिथियों ने दे.सं.वि.वि. में स्थापित एशिया के प्रथम बाल्टिक सेंटर का निरीक्षण किया। आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने माननीय उपराष्ट्रपति एवं माननीय राज्यपाल को स्वावलम्बन संकाय-हथकरघा, हस्त निर्मित पेपर उद्योग, गोशाला आदि का दिग्दर्शन कराया। विशिष्ट अतिथियों ने प्रज्ञेश्वर महादेव पर भगवान शिव को और शौर्य की दीवार पर अमर शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की। उपराष्ट्रपति जी ने प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर परिसर में रुद्राक्ष की पौध रोपी।

प्रज्ञेश्वर महादेव पर पुष्पांजलि, रुद्राक्ष की पौध का रोपण, शौर्य की दीवार पर पुष्पांजलि तथा हथकरघा उद्योग का निरीक्षण

सवंत् 2079 का स्वागत सामूहिक सूर्यअर्घ्यदान से

हजारों साधकों ने एक साथ किया सूर्यअर्घ्यदान, सायंकाल हर द्वार पर सजी दीपमालाएँ

अखिल विश्व गायत्री परिवार के मुख्यालय शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से नवसंवत् 2079 का स्वागत भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परम्पराओं के अनुरूप करने का आह्वान किया गया। युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में भी बड़े उल्लास और उत्साह के साथ स्वागत समारोह आयोजित हुआ। हजारों आश्रमवासी, शिविरार्थियों ने श्रीरामपुरम के विशाल मैदान में पंक्तिबद्ध होकर शंखध्वनि के पश्चात् वैदिक मंत्रों के बीच एक साथ सूर्यअर्घ्यदान किया। इस अवसर पर विश्वमानवता को परस्पर सहयोग और सद्भाव के साथ शान्ति एवं प्रगति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले, ऐसी प्रार्थना की गई।

सामूहिक सूर्यअर्घ्यदान के पश्चात् प्रभातफेरी के रूप में शान्तिकुञ्ज का भ्रमण करते हुए सभी ने अपने अंतस् के उल्लास की अभिव्यक्ति की। फेरी का समापन ऋषियुग्म के स्मारकों के समक्ष आरती के साथ हुआ।

सायंकाल नवसंवत् के स्वागत में सभी कार्यकर्त्ताओं ने अपने-अपने द्वार पर दीपमालाएँ सजाईं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की नौ दिवसीय व्याख्यानमाला

'श्री रामचरितमानस में श्रीराम वचनामृत'

कोरोना महामारी के विषतुल्य संकट के बाद यह नवरात्रि अमृततुल्य स्वास्थ्य, समृद्धि एवं विकास को ग्रहण करने का अवसर है। – श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

प्रत्येक नवरात्रि की भाँति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की नौ दिवसीय व्याख्यानमाला आरम्भ हुई। यह 2 अप्रैल से 10 अप्रैल 2022 तक चलेगी।इस बार का विषय है 'श्री रामचरितमानस में श्रीराम वचनामृत'।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने व्याख्यानमाला की भूमिका में कहा कि आज से 'राक्षस' नामक संवत्सर आरम्भ हो रहा है। इसका सकारात्मक अर्थ है 'रक्षा करने वाला'। उन्होंने कहा कि कोरोना के भयंकर संकट को झेलने के बाद यह नए युग में, नए जीवन में प्रवेश का अवसर है। जैसे समुद्र मंथन के बाद पहले विष और फिर अमृत निकला था, जैसे रात के बाद दिन, पाप के बाद पुण्य का उदय होता है, उसी प्रकार दुनिया ने

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का वर्चुअल उद्बोधन

कोरोना महामारी के रूप में विषतुल्य संकट को झेला है, उसके बाद अमृततुल्य स्वास्थ्य, समृद्धि व विकास को ग्रहण करना है।

श्रद्धेय ने कहा कि गिरना सरल है, उठना कठिन। विष तो सारी दुनिया के लिए सहज उपलब्ध है, लेकिन अमृत पाने के लिए पात्रता जरूरी है। हमें पात्रता का विकास करना होगा। इस नवरात्रि का यही संदेश है कि व्यक्ति अपने जीवन में देवत्व जगाने हेतु उन तथ्यों की और उन वचनों की गहराई में जाए, जो भगवान श्रीराम के मुख से निकले।

आदरणीय डॉ. साहब ने रामचरित मानस की चौपाइयों के माध्यम से भगवान श्रीराम के वाणी की सरसता, उत्कृष्टता एवं लोकहितकारी स्वरूप की व्याख्या की। उन्होंने वाणी के गुण-दोषों की व्याख्या करते हुए बताया कि हम क्या बोलें, कैसे बोलें?

सत्संग की महिमा बताते हुए उन्होंने कहा कि सत्संग से जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं। गिरना-भटकना सरल है, सँभलना-सही दिशा में जाना कठिन है। सत्संग से यह आसान हो जाता है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.4.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23